लाशों से हो रही लूट

केदार और मंदाकिनी घाटी में भगवान के दर पर आए हजारों लोगों को मौत ने चक्रव्यूह रचकर मारा। वहां जहां-तहां लाशों के ढेर पड़े हुए हैं। वहां वहशी भी घुस गए हैं। वहशत नंगे नाच रही है। लाशों से लूटपाट हो रही है। महिलाओं से छेड़छाड़ की भी खबरें आ रही हैं। रविवार को बचाकर लाए गए कई लोगों ने केदारघाटी में गौरीकुंड से केदारनाथ तक लूटपाट और बर्बरता की दास्तां बयान की। हैरान करने वाली बात यह है लूटपाट और महिलाओं से छेड़छाड़ के आरोप ढोंगी साधुओं और नेपाली मजदूरों पर लगे हैं। रुड़की आईआईटी में पीएचडी कर रहे नीलाबंर केदारनाथ से बचकर लौटे हैं। बताते हैं कि कुदरत की मार के बाद नेपाली बदमाशों की करतूतें भी देखीं। कुछ लोगों ने तो इंसानियत की हदें भी पार कर दीं। वे लाशों से चेन, अंगूठी, कड़ा आदि लूट रहे थे। जिसकी अंगूठी या फिर कड़ा नहीं निकला तो उन्होंने उसकी उंगली और हाथ ही काट दिया।

पहाड़ों पर प्रलय

यात्री बेहिसाब, रखा नहीं हिसाब

सरकार की लापरवाही का खामियाजा भुगत रहे लापता लोगों के परिजन

हेमवती नंदन भट्ट

10 लाख लोगों ने की यात्रा

55 हजार लोग ही किए गए पंजीकृत

ऋषिकेश। चारधाम यात्रा व्यवस्था और यात्रियों की सुरक्षा को लेकर राज्य सरकार कभी भी गंभीर नहीं रही। खासकर धामों को जाने वाले यात्रियों के पंजीकरण में बरती गई लापरवाही के कारण बीते सप्ताह की प्राकृतिक आपदा के बाद सरकार प्रभावित यात्रियों की सही संख्या नहीं बता पा रही है। सरकार की लापरवाही का खामियाजा यात्रियों के परिजनों को दर-दर भटककर भुगतना पड़ रहा है। सरकार अथवा उसके द्वारा संचालित रोटेशन द्वारा संयुक्त रोटेशन यात्रा व्यवस्था समिति को नियमानुसार संचालित करने की कोशिश की गई होती तो यात्रियों को मदद में दिक्कतें नहीं आती।

चारधाम यात्राकाल में धामों को जाने वाले वाहनों का संयुक्त रोटेशन और नगर पालिका की ओर से पंजीकरण किया जाता है। पंजीकृत होने के बाद किसी भी दुर्घटना अथवा आपात स्थिति में संबंधित वाहनों में यात्रा कर रहे लोगों के नाम, संख्या, पता आदि की समुचित जानकारी उपलब्ध हो सकती है।

सरकार, स्थानीय प्रशासन, परिवहन विभाग की ओर से कभी इस व्यवस्था को व्यवस्थित तरीके से लागू करने की जहमत नहीं उठाई गई। रिकार्ड के अभाव में इस वर्ष आपदा के चलते केदारघाटी और अन्य स्थानों पर फंसे और लापता हुए लोगों के बारे में सरकार से कुछ बताते नहीं बन रहा है।

दरअसल इस वर्ष सरकार द्वारा रोटेशन को सरकारी जामा तो पहनाया गया, मगर उसके तहत यात्रा पर जाने वाले अन्य निजी परिवहन कंपनियों, ट्रेवल एजेंसियों, निजी वाहनों और यात्रियों के पंजीकरण की व्यवस्था को अनिवार्य रूप से लागू नहीं किया गया। करीब एक महीने आठ दिन चली यात्रा में 10 से 12 लाख श्रद्धालुओं के मुकाबले रोटेशन के पास महज 1878 बसों और 55 हजार चार सौ 65 लोगों का ही रिकार्ड है। जिसे 10 मई से 16 जून 2013 तक पंजीकृत किया गया है। इसके अलावा नगर पालिका ऋषिकेश की ओर से इसी समयावधि में कुल एक लाख 33 हजार 359 यात्रियों का पंजीकरण किया गया है। जबकि अन्य लाखों श्रद्धालुओं का पंजीकरण अनिवार्य नहीं समझा गया।

सरकार स्तर पर बरती जा रही इसी कोताही का नतीजा है कि सरकार के पास आपदा पीड़ित श्रद्धालुओं की संख्या, नाम, पते कुछ नहीं है। नतीजतन पीड़ितों के परिजन अपनों की तलाश में दर-दर की ठोकरें खाने को अभिशप्त हैं।

नहीं मिलेगा बीमे का लाभ

राज्य सरकार के पास यात्रा के दौरान आपदा की जद में आने वाले हजारों लोगों (मृतक/लापता) लोगों का कोई पंजीकृत रिकार्ड नहीं है। ऐसे में सरकार को ऐसे श्रद्धालुओं को मुआवजे के आवंटन में भी तकनीकी दिक्कतें आएंगी। पर्यटन विभाग की ओर से चारधाम यात्रियों की बीमा योजना दो साल से लंबित है, जिसे दूसरे साल भी लागू नहीं किया जा सका।

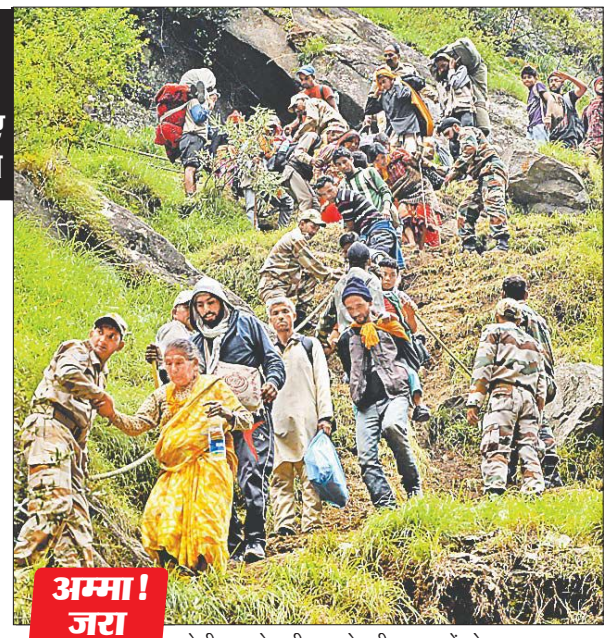

अम्मा! जरा संभल के

जोशीमठ से बद्रीनाथ के बीच पहाड़ों से चलकर आए यात्रियों को सहारा देते सेना के जवान।

क्या हैं कारण

इस वर्ष पंजीकरण की संख्या में कमी का एक कारण संयुक्त रोटेशन व्यवस्था में विघटन भी रहा है। निजी कंपनियों के एक छत के नीचे नहीं आने के कारण सरकार ने यात्रा ज्वाइंट रोटेशन का नोटिफिकेशन तो किया, मगर उनके संचालन में कई नियमों की अनदेखी की गई। यात्राकाल में ऋषिकेश से संचालित और पंजीकृत यात्रा वाहनों के मुकाबले कई गुना अधिक यात्रा वाहन हरिद्वार से संचालित किए गए। जिनका कहीं कोई लेखा जोखा नहीं रखा गया, न ही स्थानीय प्रशासन, रोटेशन और परिवहन विभाग द्वारा चेक पोस्टों पर ऐसे वाहनों की चेकिंग या उनमें सवार लोगों के पंजीकरण में कोई दिलचस्पी दिखाई गई।

मुश्किल सफर

गंगोत्री की ओर से कुछ इस तरह गिरते पड़ते उत्तरकाशी की तरफ पहुंच रहे हैं तीर्थयात्री।

हवाई सेवाएं न होती और बुरा होता हाल

रुद्रप्रयाग। केदारनाथ में आपदा आने के बाद यहां फंसे लोगो को बचाने के लिए एवीएशन कंपनियों के हेलीकॉप्टर देवदूत बनकर उतरे। यदि केदारनाथ धाम के लिए हवाई सेवाएं नहीं चल रही होती, तो राहत और बचाव कार्य शुरू होने में ज्यादा वक्त लग जाता।

15,16 और 17 जून की बारिश ने सोनप्रयाग से केदारनाथ तक 19 किमी मार्ग को धो डाला था। दरअसल केदारनाथ धाम के लिए मस्ता, मैखंडा, फाटा और शेरसी से 10 कंपनियों के चॉपर हवाई सेवाएं दे रहे हैं। कुछ लोग 12 जून से केदारनाथ धाम में हवाई सेवाओं के विरोध में अनशन पर बैठ गए थे। 14 से उन्होंने हवाई सेवाएं बाधित कर दी थी। इसी दौरान केदारनाथ में हादसा हो गया। 17 जून की शाम बारिश रुकने पर सुमित एवीएशन के पायलट कैप्टन भूपेंद्र ने केदारनाथ जाने की कोशिश की। लेकिन वह जंगलचट्टी से आगे नहीं बढ़ पाए। लेकिन बाद में सारा तंत्र हरकत में आया। अगले दिन से बचाव अभियान शुरू हो पाया।

नहीं जा सकी अंतिम संस्कार को बनी टीम

देहरादून। केदार घाटी में मौसम खराब होने के कारण शवों का अंतिम संस्कार करने वाली टीम रवाना नहीं हो सकी। मुख्य सचिव सुभाष कुमार ने बताया कि केदार घाटी में सुबह बारिश के बाद कोहरा छाया रहा। इसी वजह से सोमवार को केदारघाटी में अंतिम संस्कार नहीं हो सका। बारिश में लकड़ी भीगने से भी दिक्कतें आ सकती है। लेकिन पूरे हिंदू रीति रिवाज के साथ जल्द ही अंतिम संस्कार किया जाएगा। गुप्तकाशी में बीमारी फैलने के सवाल पर मुख्य सचिव ने कहा कि वहां मौसम ठंडा होने की वजह से ज्यादा खतरा नहीं हैं। फिर भी रोकथाम के पूरे उपाय किए जा रहे है। उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार हर संभव कदम उठा रही है। जल्द हिंदू रीति रिवाज से अंतिम संस्कार कराया जाएगा।

यात्रियों की सुरक्षा का बीमा प्रीमियम जमा नहीं कराया

बिशन सिंह बोरा

हर साल मंदिर को करोड़ों का चढ़ावा आता है, फिर भी की लापरवाही

देहरादून। केदारघाटी में कुदरत ने जिस पैमाने पर जन और धन की हानि की उसकी भरपाई किसी भी सूरत में मुमकिन नहीं है। लेकिन कुछ हद तक लोगों को राहत मिल जाती अगर बदरी-केदार मंदिर समिति लापरवाह न रही होती। करोड़ों चढ़ावा आता है लेकिन समिति चंद ने हजार रुपये यात्रियों की सुरक्षा बीमा का प्रीमियम जमा ही नहीं कराया।

श्री बदरीनाथ और केदारनाथ मंदिर परिसर में देश-दुनिया से आने वाले तीर्थयात्रियों की सुरक्षा के लिए वर्ष 2006 में सुरक्षा बीमा योजना शुरू की गई थी।

जिसके तहत बद्रीनाथ में एक करोड़ और केदारनाथ में 50 लाख रुपये की बीमा योजना शुरू की गई थी। ओरियंटल इंश्योरेंस कंपनी से यात्रियों का बीमा कराया गया था। बीमा योजना के तहत मंदिर परिसर में किसी दुर्घटना पर मृतक तीर्थ यात्री परिजनों को एक लाख रुपये तक के क्लेम का प्रावधान था, लेकिन वर्ष 2006 में शुरू की गई बीमा योजना वर्ष 2007 के बाद दम तोड़ गई, तीर्थ यात्रियों की संख्या और चढ़ावे में हर साल इजाफे के बावजूद समिति तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा के प्रति कतई गंभीर नहीं थी, यही कारण था कि वर्ष 2006 में 37 हजार 881 रुपये और वर्ष 2007 में 48 हजार 825 रुपये प्रीमियम जमा करने के बाद प्रीमियम जमा ही नहीं हो पाया।

> तीर्थयात्रियों की बीमा योजना आगे चलाई जानी चाहिए थी। ऐसा नहीं हो पाया। शुरुआत में यहां हृदयगति रुकने एवं अन्य छुटपुट हादसे होते रहते थे। जिसे देखते हुए धार्मिक स्थलों पर यात्रियों की सुरक्षा के लिए इसे शुरू किया गया। समिति प्रयास करती तो कई दानदाता ही इस योजना में मदद करते। इस पर अधिक से अधिक एक लाख रुपये तक प्रीमियम आता।
>
> **-डा.अनुसूया प्रसाद मैखुरी,** विधान सभा उपाध्यक्ष एवं श्री बद्री-केदार मंदिर समिति के पूर्व अध्यक्ष

> बीमा का पहले और दूसरे साल ही प्रीमियम जमा हो पाया। हम तो चाहते थे कि मंदिर की पूरी परिसंपत्ति का बीमा कराया जाए। लेकिन केवल तीर्थ यात्रियों का बीमा कराया गया। इसके लिए बदरीनाथ और केदारनाथ में मंदिर परिसर और आस-पास के स्थल चिन्हित थे। इन स्थलों पर दुर्घटना होने पर क्लेम दिया जाता, लेकिन दो प्रीमियम जमा कराने के बाद आगे प्रीमियम जमा नहीं हुआ।
>
> **-चंद्रशेखर भट्ट,** ओरियंटल इंश्योरेंस कंपनी के फील्ड आफिसर

प्रस्तुति
कुमार अतुल और प्रिंस माहेश्वरी

- ताजातरीन खबरें
- तबाही का मंजर तस्वीरों में
- बचाए गए लोगों की सूची देखें

amarujala.com पर